International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 563-564

किशोरावस्था में यौन शिक्षा की आवश्यकता : एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

Ravindra Kumar Dubey
Assistant Professor, Beni Madhav Singh PG College Bigahiya, Allahabad, Uttar Pradesh, India

प्रस्तावना

किशोरावस्था मनुष्य के जीवन का बसन्तकाल माना गया है। किशोरावस्था के समय को निश्चित करना बहुत ही कठिन हे क्योंकि इसका सम्बन्ध आयु की अपेक्षा किसी आयु विशेष में उभरने वाले लक्षणों से अधिक है, परन्तु शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने किशोरावस्था को जो, 13 वर्ष की आयु में प्रारम्भ होकर 19–20 साल की आयु तक की खेती है, एक महत्वपूर्ण अवस्था बताया है। 19वीं सदीं के अन्तिम चरण में किए गए शोधों के फलस्वरूप किशोरावस्था को व्यक्ति के जीवन की मुख्य अवस्था के रूप में स्वीकार किया गया है। यह काल सभी प्रकार की मानसिक शक्तियों के विकास का समय है। भावों के विकास के साथ–साथ बालक के कल्पना का विकास होता है। उसमें सभी प्रकार के सौन्दर्य की रूचि उत्पन्न होती है। वर्तमान में मनोवैज्ञानिकों में इस बात पर सहमति है कि यह अवस्था बाल्यावस्था और व्यस्कावस्था के बीच संक्रमण अवधि होती है और इसलिए कई कारणों से इस काल को संघर्ष तनाव एवं आंधी का काल कहते है। इस अवस्था में उतेजना, साहस, भावुकता और काम के प्रति उत्सुकता स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होती है। किशोरावस्था शारीरिक परिपक्वता की अवस्था है इस अवस्था में कामुकता की प्रवृत्ति भी अधिक पायी जाती है। कामुकता की अनुमति बालक को 13 वर्ष से ही होने लगती है। इसका कारण उसके शरीर में स्थित ग्रन्थियों का स्राव होता है। अतएव बहुत से किशोर बालक अनेक प्रकार की कामुक क्रियाएं अनायास ही करने लगते हैं। मनोवैज्ञानिकों में इस बात की सहमति है कि व्यक्ति में यौन भावना जन्म से ही होती है और 3–4 साल की उम्र से यह ठोस रूप लेने लगती है। 3–4 वर्ष की कम उम्र में यौन भावना का रूप इस ठोस रूप से भिनन होता है। बाल्यावस्था में यौन भावना अत्याधिक मजबूत एवं जिज्ञासापूर्ण हो जाती है तथा किशोरावस्था में यह भावना पूर्णरूपेण परिपक्व हो जाती है। विभिन्न अध्ययनों एवं शोधों के परिणाम से स्पष्ट हुआ है कि यौन भावना बालकों के व्यक्तित्व विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि इस अवस्था में होने वाले परिवर्तनों को सही तरीके से नहीं समझा जाए तो किशोर–किशोरियां गलत रास्ते या भटकाव भरे जीवन में जा सकते है। चूंकि इस अवस्था में काम–उत्तेजना अत्याधिक मात्रा में पायी जाती है। काम–उत्तेजना को शान्त करने के लिए युवक–युवतियां अप्राकृतिक तरीकों की तरफ बढ़ जाते है जैसे– हस्तमैथुन, गुदामैथुन, समलैंगिक मैथुन आदि। इस गलत रास्ते पर चलते हुए युवक–युवतियां अंजाने में मन में अपराध की भावना भर लेते हैं। फिर जब वह एक बार अपराध के रास्ते पर बढ़ जाते हैं तो उनकी पूरी जिंदगी बर्बाद हो जाती है। वास्तव में भोजन की तरह यौन–सम्बन्धों के बीना भी जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। मनुष्य और पशु में अन्तर इतना ही है कि पशु अपने भोजन अथवा यौन की भूख मिटाते समय बदहवास होकर मर्यादाओं का अतिक्रमण कर लेता है, जबकि मनुष्य आमतौर पर सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करता है। परन्तु किशोरावस्था में कामुकता की अत्याधिक प्रवृत्ति और उचित ज्ञान के अभाव में बालक अपनी यौन भुख मिटाने के लिए पशुवत् व्यवहार करने में भी नहीं हिचकता है। अतः यौन शिक्षा के माध्यम से किशोरों को किशोरावस्था में होने वाले शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक तथा सामाजिक परिवर्तनों, यौन एवं यौन संक्रमित रोगों की वैज्ञानिक जानकारी दी जानी आवश्यक है। जिससे उनका शरीर स्वस्थ रहे और वे अज्ञानता तथा भ्रमों से बच सके।

यौन शिक्षा का अर्थ केवल शारीरिक संसर्ग से सम्बन्धित नहीं है बल्कि यौन शिक्षा के माध्यम से कम यौन जनित विभिन्न जिज्ञासाओं, विभिन्न यौन जनक बिमारियों की जानकारी और उससे बचने के उपायों के प्रति जागरूक होते है। यदि सही तरीके से किशोर एवं किशोरियों को सेक्स से सम्बन्धित सलाह दी जाए तो यौन रोगों में तथा यौन अपराधों में भी कमी आ सकती है। यौन शिक्षा उन्हें अपने शरीर के प्रति, यौन सम्बन्धों के प्रति रिश्तों के गरिमा के प्रति सचेत करती है। इस प्रकार स्पष्टत क्रम रूप सकते है कि यौन शिक्षा से तात्पर्य बालक एवं बालिकाओं को लिंगीय भेद एवं यौन के हर पहलू के बारे में सही–सही जानकारी देकर उसके प्रति एक स्वस्थ मनोवृत्ति कायम करने से होता है कि वे व्यस्कावस्था में एक सुन्दर, तनावरहित, सामाजिक एंव लैंगिक जीवन व्यतीत कर सके। बटरफील्ड (Butterfield, 1979) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह यह बताया कि यौन शिक्षा के अभाव में किशोरों एवं किशोरियों में तरह–तरह के यौन कुसमंजन जैसे–हस्तमैथुन, अनावश्यक यौन तनाव आदि विकसित हो जाते है। इसलिए मनोवैज्ञानिकों के मध्य इस बात पर सहमति है कि यौन शिक्षा की शुरूआत बचपन से ही घर पर माता पिता द्वारा होनी चाहिए, फिर शिक्षकों द्वारा स्कूलों में भी उस पर स्पष्टीकरण होना चाहिए। ब्लेयर, जोन्स तथा सिम्पसन जैसे मनोवैज्ञानिकों ने यौन शिक्षा पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि– ''स्कूल जाना प्रारम्भ करने से पहले से ही यौन शिक्षा घर पर दी जानी चाहिए, प्रारम्भिक स्कूली वर्षों में भी इसे जारी रखना चाहिए तथा किशोरावस्था में इस पर स्कूल तथा घर दोनों में ही काफी ध्यान दिया जाना चाहिए।''

वैसे किशोरो को यौन शिक्षा देने के प्रश्न पर यदि गम्भीरता से विचार किया जाए तो यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि मनोवैज्ञानिक आधार पर शिक्षक का दायित्व है कि वह शिक्षक की सभी जिज्ञासाओं को उचित उत्तर देकर शान्त करें। उस दृष्टि से चूंकि योनि–रहस्य को जानना भी किशोरों की एक स्वभाविक जिज्ञासा है, अतः उसे भी शान्त करना शिक्षक का दायित्व है। इस प्रकार स्कूलों में यौन–शिक्षा दी जानी चाहिए।

नेशनल फैमली हेल्थ सर्वे के अनुसार यौन शिक्षा बेहत्तर समाज के निर्माण में अहम भूमिका निभा सकती है। डब्ल्यू0 एच0ओ0 के

अनुसार दुनिया में 12 से 19 वर्ष की आयु समूह के 34 प्रतिशत लोग एच0आई0वी0 से संक्रमित है। सर्वे के अनुसार देश में 12 प्रतिशत लड़कियाँ 15–19 वर्ष की उम्र में ही माँ बन जाती है। अतः यह अवस्था यौन के दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण होती है और 80% शिक्षक, माता–पिता, छात्र एवं गैर माता–पिता यह मानते है कि किशोरों को यौन शिक्षा स्कूल में दी जानी चाहिए। यह तथ्य केनेथ तथा हेण्डरसन (1952) के अध्ययन पर आधारित है। इस उम्र में किशोर कई माध्यमों से यौन के बारे में सूचनाएं प्राप्त करते है जिनमें दोस्त, सिनेमा, व्यस्क लोग, साहित्य, ड्राईंग आदि मुख्य है। और जब उपरोक्त स्त्रोतों से किशोरों को जब गलत यौन सूचनाएं मिलती है और उनके पास उन सूचनाओं के सत्यापन का कोई रास्ता नहीं होता है तो किशोरों को गलत यौन आदतें लग जाते है जो उनकी जिंदगी को सांवेगिक एवं सामाजिक रूप से तनावपूर्ण बना देता है।

किशोरों के लिए यौन शिक्षा का महत्व

- आजीवन यौन स्वास्थ्य के लिए एक मजबूत आधार बनाए यह किसी की पहचान संबंधों अंतरंगता के बारे में जानकारी, व्यवहार, विश्वास और मूल्य प्राप्त करने के द्वारा किया जाता है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा परिभाषित किया गया है कि यौन स्वास्थ्य को न केवल रेाग या दुर्बलता की कमी बल्कि कामुकता के सम्बन्ध में शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक और सामाजिक कल्याण के रूप में भी मान जाता है।
- व्यस्कता में प्रवेश के कारण किशोर अपने शारीरिक व्यवहार में विकास के बदलावों का अनुभव करते है।

यौन–शिक्षा की आवश्यकता है

1. यह बेहद महत्वपूर्ण है युवा लड़के और लड़कियों की उनके शरीर में हुए परिवर्तनों के कारण की जानकारी हो पाए। जब वे किशोरावस्था में पहुँचते है तो उन्हें यौन शिक्षा दी जानी चाहिए।
2. लड़के और लड़कियाँ दोनों को मासिक धर्म चक्र के बारे में समझने की जरूरत है ताकि लड़कियों को इसे प्रकृति की एक सामान्य भूमिका के रूप स्वीकार किया जाए और लड़को को माहवारी, टैम्पोन और सेनेटरी पैड से घृणा नहीं होना चाहिए। इस मुद्दे के प्रति संवेदनशील होने के लिए इसके बारे में जानना आवश्यक है।
3. सेक्स के बारे में जागरूकता, गर्भाधारण, एसटीडी और एचआईवी जैसे सुरक्षित सेक्स और बिमारियों सहित अन्य सम्बन्धित मुद्दों के बारे में जागरूकता पैदा करेगा। डब्लूएचओ के अनुसार दुनिया में 12 से 19 वर्ष के आयु समूह के 34 प्रतिशत लोग एचआईवी से संक्रमित है।
4. सेक्स युवाओं को जिम्मेदार बना देगी और इस तरह वे उत्सुकता की बजाए संभव परिणाम के पूरे ज्ञान के साथ सेक्स करने का निर्णय लेंगे और बिना किसी नकारात्मक प्रभाव के संभोग कर सकेंगे।
5. युवाओं को गर्भनिरोधक सामग्री को खरीदने के लिए शर्म नहीं करनी चाहिए जो कि एक बहुत महत्वपूर्ण पहलू है।
6. बलात्कार, जबरदस्ती वाले संभोग को समाप्त करने के लिए, यौन शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है।

कैसे दे यौन शिक्षा

किशोरों को यौन शिक्षा कैसे दी जाए मनोवैज्ञानिकों द्वारा शोध किए गए हैं। कुछ अत्याधिक मशहूर मनोवैज्ञानिक जैसे बैंकर (1965), ग्रुएनवर्ग (1977) क्रो एवं क्रो (1978) है। इन लोगों का मानना है कि किशोरों को यौन शिक्षा निम्न तरीके से दी जानी चाहिए।

1. घर–परिवार में माता–पिता व अन्य व्यस्क सदस्य को किशोरों एवं किशोरियों को बैठाकर बिना किसी हिचकचाहट के यौन विषयों पर बात करनी चाहिए और उचित उदाहरण देकर उन्हें यौन विकृति तथा कुप्रभावों से अवगत कराना चाहिए।
2. विद्यालय में यौन शिक्षा देने के ख्याल से यौन शिक्षा को स्कूल के पाठ्यक्रम का एक अंग बना देना चाहिए।
3. किशोरों में यौन शिक्षा कुछ विशेष बनाए फिल्मों के माध्यम से दी जाए। क्योंकि फिल्मों के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा काफी कारगर होगी। स्ट्रेन (1979)– ऐसी फिल्मों को किशोरों में यौन के प्रति एक स्वस्थ मनोवृत्ति करने में काफी सहायता मिली है।

निष्कर्ष

किशोरावस्था अर्थात् उम्र का वह पड़ाव जहाँ किशोर मन पूरी तरह से परिपक्व नहीं होता। उम्र के इस पड़ाव में किशोर मन में उथल–पुथल चल रही होती है। कुछ कर गुजरने का जूनून किन्तु अनुभव की कमी एवं उचित मार्गदर्शन का अभाव उन्हें सही राह से भटका सकता है। इस अवस्था में कामुकता की प्रवृत्ति अत्याधिक पायी जाती है। अपनी कामोत्तेजना को शान्त करने के लिए किशोर अप्राकृतिक तरीकों को अपनाने के साथ–साथ गलत व अपराध के रास्ते पर चलते हुए अपनी जिन्दगी बर्बाद कर लेते है। इसलिए किशोरों को सही मार्ग पर लाकर उनके क्षमताओं व शक्तियों का उपयोग उनके स्वयं, समाज तथा राष्ट्रहीत मे करने के लिए उन्हें यौन–शिक्षा देना और भी आवश्यक हो जाता है।

किशोरों को दी जाने वाली यौन शिक्षा अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है परन्तु साथ ही साथ जटील भी। किशोरों में यौन शिक्षा की महत्ता अधिक इसलिए मानी गयी क्योंकि यही वह अवस्था है जहाँ से विपरीत लिंग के साथ व्यक्ति यौन संबंध कायम कर अपने लैंगिक जीवन की शुरूआत करता है। यौन शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए ताकि युवा वर्ग सही शिक्षा पा सके ना कि गलत जगह से ऐसे ज्ञान प्राप्त करें जो फायदा तो पता नहीं पर नुकसान जरूर कर सकते है। अभिभावकों को भी अपने बच्चों को सही समय पर यौन शिक्षा देनी चाहिए। इस प्रकार कम देखते है कि आज किशोरों के लिए यौन शिक्षा की बहुत ही ज्यादा आवश्यकता है।

सन्दर्भ

1. Gupta, S.P. (Dr.) Gupta. Alka (Dr.)- History, Development and Problems of Indian Education, P-519
2. Singh Arun Kumar- Educational Psychalogy, P-262
3. Sharma, B.N. (Prof)- Educational Psychology, P-123
4. www.theypfoundation.org
5. librarykvfacilkachandigarh.blogspot.com
6. https://hi.m.wikipedia.org
7. https://hindi.mapsofindia.com
8. https:// careguru.in
9. hindi.citicen-new&.org>blog-post-84